

UPDAAN

2025

सूरदास

क्षितिज
काव्य बंध

6
मुद्दावरे

हिन्दी

Lecture - 01

By – Garima Mishra Ma'am

ARTS WALLAH



Topics

to be covered



1

कवि का परिचय

2

पाठ की व्याख्या

3

पाठ से सम्बंधित प्रश्न

शुद्ध कवि



Recap *of previous lecture*



1

पद-परिचय

2

पद-परिचय के प्रकार

3

पद-परिचय से सम्बंधित प्रश्न



कवि परिचय

सूरदास



कवि परिचय



सं० 12 रस
का १-थायी

सूरदास का जन्म सन् 1478 में माना जाता है। एक मान्यता के अनुसार उनका जन्म मथुरा के निकट रुनकता या रेणुका क्षेत्र में हुआ जबकि दूसरी मान्यता के अनुसार उनका जन्म स्थान दिल्ली के पास सीही माना जाता है। महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्य सूरदास अष्टछाप के कवियों में सर्वाधिक प्रसिद्ध है। वे मथुरा और वृन्दावन के बीच गऊघाट पर रहते थे और श्रीनाथ जी के मंदिर में भजन-कीर्तन करते थे। सन् 1583 में पारसौली में उनका निधन हुआ।

म।प्र.
रति

गुरु

उनके तीन ग्रंथों सूरसागर, साहित्य लहरी और सूर सारावली में सूरसागर हो सर्वाधिक लोकप्रिय हुआ। खेतो और पशुपालन वाले भारतीय समाज का दैनिक अंतरंग चित्र और मनुष्य की स्वाभाविक वृत्तियों का चित्रण सूर की कविता में मिलता है। सूर 'वात्सल्य' और 'श्रृंगार' के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। कृष्ण और गोपियों का प्रेम सहज मानवीय प्रेम की प्रतिष्ठा करता है। सूर ने मानव प्रेम की गौरवगाथा के माध्यम से सामान्य मनुष्यों को हीनताबोध से मुक्त किया, उनमें जीने की ललक पैदा की।

उनकी कविता में ब्रजभाषा का निखरा हुआ रूप है। वह चली आ रही लोकगीतों की परंपरा की ही श्रेष्ठ कड़ी है।



पाठ परिचय



यहाँ सूरसागर के भ्रमरगीत से चार पद लिए गए हैं। कृष्ण ने मथुरा जाने के बाद स्वयं न लौटकर उद्धव के जरिए गोपियों के पास संदेश भेजा था। उद्धव ने निर्गुण ब्रह्म एवं योग का उपदेश देकर गोपियों की विरह वेदना को शांत करने का प्रयास किया। गोपियाँ ज्ञान मार्ग की बजाय प्रेम मार्ग को पसंद करती थीं। इस कारण उन्हें उद्धव का ^{संदेश} संदेश पसंद नहीं आया। तभी वहाँ एक भौरा आ पहुँचा। यहीं से भ्रमरगीत का प्रारंभ होता है। गोपियों ने भ्रमर के बहाने उद्धव पर व्यंग्य बाण छोड़े। पहले पद में गोपियों को यह शिकायत वाजिब लगती है कि यदि उद्धव कभी स्नेह के धागे से बँधे होते तो वे विरह की वेदना को अनुभूत अवश्य कर पाते। दूसरे पद में गोपियों की यह स्वीकारोक्ति कि उनके मन की अभिलाषाएँ मन में ही रह गई, कृष्णा के प्रति उनके प्रेम की गहराई को अभिव्यक्त करती है। तीसरे पद में वे उद्धव की योग साधना को कड़वी ककड़ी जैसा बताकर अपने एकनिष्ठ प्रेम में दृढ़ विश्वास प्रकट करती हैं। चौथे पद में उद्धव को ताना मारती हैं कि कृष्ण ने अब राजनीति पढ़ ली है। अंत में गोपियों द्वारा उद्धव को राजधर्म (प्रजा का हित) याद दिलाया जाना सूरदास की लोकधर्मिता को दर्शाता है।





पद

①

मित्र बहुत भाग्यवान
ऊधौ, तुम हो अति बड़भागी।
अपराह रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूंद न ताकौं लागी।
प्रीति-नदी में पाउँ न बाँस्यौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी॥

भावार्थ- गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि हे उद्धव, तुम बहुत भाग्यशाली हो. क्योंकि तुम प्रेम-बंधन से बिल्कुल अछूते अर्थात् स्वतंत्र हो और न ही तुम्हारा मन किसी के प्रेम में अनुरक्त हुआ है। जिस प्रकार कमल का पत्ता सदैव जल के अंदर रहता है, परंतु वह जल से अछूता ही रहता है, उस पर जल की एक बूंद का भी धब्बा नहीं लगता और जिस प्रकार तेल की मटकी को जल में रखने पर जल की एक बूंद भी उस पर नहीं ठहरती, उसी प्रकार तुम कृष्ण के समीप रहते हुए भी उनके प्रेम-बंधन से सर्वथा मुक्त हो। तुमने प्रेम रूपी नदी में कभी पाँव ही नहीं डुबोया अर्थात् तुमने कभी किसी से प्रेम ही नहीं किया और न ही कभी किसी के रूप-लावण्य ने तुम्हें आकर्षित किया है। गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि हम तो भोली-भाली अबलाएँ हैं और हम कृष्ण के प्रेम में अनुरक्त हो गई हैं। हमारी स्थिति उन चींटियों के समान है जो गुड़ पर आसक्त होकर उससे चिपट जाती हैं और फिर स्वयं को छुड़ा न पाने के कारण वहीं अपने प्राण त्याग देती हैं।



पद



शब्दार्थ-

बड़भागी- बड़े भाग्य वाले, भाग्यवान

अपरस- अलिप्त, अछूता, अनासक्त

तगा- धागा, बंधन

पुटइनि- कमल

पात- पत्ता

दागी - दाग, धब्बा

माहँ- में

प्रीति-नदी - प्रेम की नदी

बोस्यौ- डुबोया

परागी- मुग्ध होना, आकर्षित होना

भोरी- भोली

गुर- गुड़

पागी- चिपकी





पद



भावार्थ- गोपियाँ उद्धव से अपनी विरह-वेदना का वर्णन करती हुई कहती हैं कि हमारे मन की व्यथा मन में ही रह गई। अर्थात् हम गोपियाँ सोचती थीं कि जब कृष्ण आएँगे तब उनके समक्ष अपने हृदय की पीड़ा को प्रकट करेंगी, परंतु कृष्ण के न आने से हमारी यह अभिलाषा पूरी न हो सकी। वे आगे कहती हैं कि हे उद्धव ! हम अपने मन की पीड़ा को किससे जाकर कहें, हमसे कुछ भी कहा नहीं जाता। हम तो कृष्ण के आगमन की आशा लिए उनके आने के नियत समय के सहारे ही अपने तन-मन की व्यथा को सहती जा रही हैं।

2 श्रुति

मन की मन ही माँझ रही ।

कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही ।

अवधि आधार आस आवन की तन मन बिथा सही ।

अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही ।

(चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही ।)

‘सूरदास’ अब धीर धरहिं क्यों, मरजादा न लही ।।



पद



अब इस योग के संदेश को सुन-सुनकर तो वियोग में जीने वाली हम गोपिकाएँ विरह की आग में और भी जलने लगी हैं। इस विरह रूपी अग्नि से रक्षा करने के लिए हम जहाँ गुहार लगाना (पुकारना) चाहती थी, वहाँ से तो योग की प्रबल धारा आ रही है। सूरदास कहते हैं कि गोपियाँ उलाहना देती हैं कि अब हम किस प्रकार धैर्य धारण करें, कृष्ण ने तो प्रेम की मर्यादा ही नहीं रखी। अर्थात् प्रेम की मर्यादा का पालन करने के लिए कृष्ण यहाँ तो आए नहीं और उद्धव के द्वारा हमें भी प्रेम का त्याग कर ज्ञान का आश्रय लेने का संदेश भेज दिया है। ऐसे में धैर्य धारण कर पाना असंभव है।





पद



शब्दार्थ-

अवधि- समय सीमा, नियत काल

अधार- आधार

आस- आशा

आवन- आगमन

बिथा- व्यथा, पीड़ा

बिरहिनि- वियोग में जीने वाली

दही- जल रही हैं, दग्ध

हुतीं- थीं

गुहारि- रक्षा के लिए पुकारना

जितहिं तैं- जहाँ से

उत- उधर, वहाँ

धार- धारा

धीर- धैर्य

मरजादा- मर्यादा, प्रतिष्ठा

लही- रखी, रही



3

हमारैँ हरि हारिल की लकरी ।

मन क्रम बचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी ।

जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जक री ।

सुनत लोग लागत है ऐसौ, ज्यों करुई ककरी ।

सु तो ब्याधि हमकोँ ले आए, देखी सुनी न करी ।

यह तो 'सूर' तिनहिं लै साँपौ, जिनके मन चकरी ।।





पद



ककड़ी

भावार्थ- गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि कृष्ण हमारे लिए हारिल पक्षी की लकड़ी के समान हैं। हम निरंतर कृष्ण के ध्यान में उसी प्रकार निमग्न रहती हैं। जिस प्रकार हारिल पक्षी कहीं भी हो और किसी भी दशा में हो, सहारे के लिए अपने पंजों में कोई न कोई लकड़ी अथवा किसी तिनके को पकड़े रहता है। हमने अपने मन, कर्म और वचन से नंद नंदन कृष्ण को अपने हृदय में दृढतापूर्वक पकड़ लिया है। हमारा मन जागते, सोते, स्वप्नावस्था में, दिन-रात कृष्ण के नाम की रट लगाता रहता है। अर्थात् कृष्ण के नाम का स्मरण ही हमारा एकमात्र ध्येय रह गया है। तुम्हारे योग की बातें सुनकर ऐसा लगता है कि जैसे हमने कोई कड़वी ककड़ी मुँह में रख ली हां, अर्थात् योग-ज्ञान की बातें हमारे लिए कड़वी ककड़ी के समान अरुचिकर एवं ग्रहण न करने योग्य हैं। तुम तो हमारे लिए योग रूपी एक ऐसी बीमारी लेकर आए हो जिसे हमने न तो कभी देखा है, न सुना है और न ही भोगा है। सूरदास के अनुसार गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि ज्ञान-योग रूपी यह बीमारी तो तुम उन्हें प्रदान करो जिनका मन हमेशा चंचल रहता है।

गोपियों के कहने का भाव यह है कि योग का उपदेश अस्थिर चित्त वाले लोगों के लिए ही उपयोगी है। उनका हृदय तो पहले से ही कृष्ण के प्रेम में पूर्णतः स्थिर है।



पद



शब्दार्थ-

हारिल - एक पक्षी जो अपने पैरों में सदैव एक लकड़ी लिए रहता है. उसे किसी दशा में छोड़ता नहीं

क्रम - कर्म

उर - हृदय

पकरी - पकड़ा हुआ

दिवस - दिन

निसि - रात

जकरी - रटती रहती हैं

करुई - कड़वी

व्याधि - रोग, पीड़ा पहुँचाने वाली वस्तु

करी - भोगा

तिनहिं - उनको

मन चकरी - मन स्थिर नहीं रहता. चंचल





पद

गुरुसा 4

हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।

समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए।
इक अति चतुर हुते पहिलै ही, अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए।
बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग-सँदेस पठाए।
ऊधौ भले लोग आगे के, ^{दूसरे का कल्याण} पर हित डोलत धाए।
अब अपनै मन फेर पाइहैं, ^{फिर से पालेंगे} चलत जु हुते चुराए।
क्यों अनीति करें आपुन, जे और अनीति छुड़ाए।
राज धरम तौ यहै 'सूर', जो प्रजा न जाहिं सताए॥

ताना

भावार्थ- गोपियाँ कृष्ण को उलाहना देती हुई उद्धव से कहती हैं कि कृष्ण अब राजनीति पढ़ आए हैं। हम मधुकर अर्थात् उद्धव की कही सारी बातें समझ गई हैं और हमने सारे समाचार पा लिए हैं। वे पहले से ही बहुत चतुर थे और अब तो उन्होंने गुरु से ग्रंथ भी पढ़ लिए हैं। हम अब उनकी बढ़ी हुई बुद्धि के बारे में जान गई हैं, जो उन्होंने हमारे लिए योग का संदेश भेजा है।

हे उद्धव! पहले के लोग बहुत अच्छे थे और दूसरों के कल्याण के लिए ही घूमते रहते थे। लेकिन अब हम अपना मन फिर से वापस पा लेंगी जिसे चुराकर कृष्ण चले गए थे। जिन्होंने दूसरों के अन्याय को समाप्त कर दिया था। वे स्वयं क्यों अन्याय कर रहे हैं? सूरदास कहते हैं कि गोपियाँ कह रही हैं कि राजधर्म तो यही है कि प्रजा को सताया न जाए, फिर कृष्ण हमें क्यों सता रहे हैं।



पद



शब्दार्थ-

मधुकर- भौरा, उद्धव के लिए गोपियों द्वारा

प्रयुक्त- संबोधन

हुते- थे

पठाए- भेजा

आगे के- पहले के

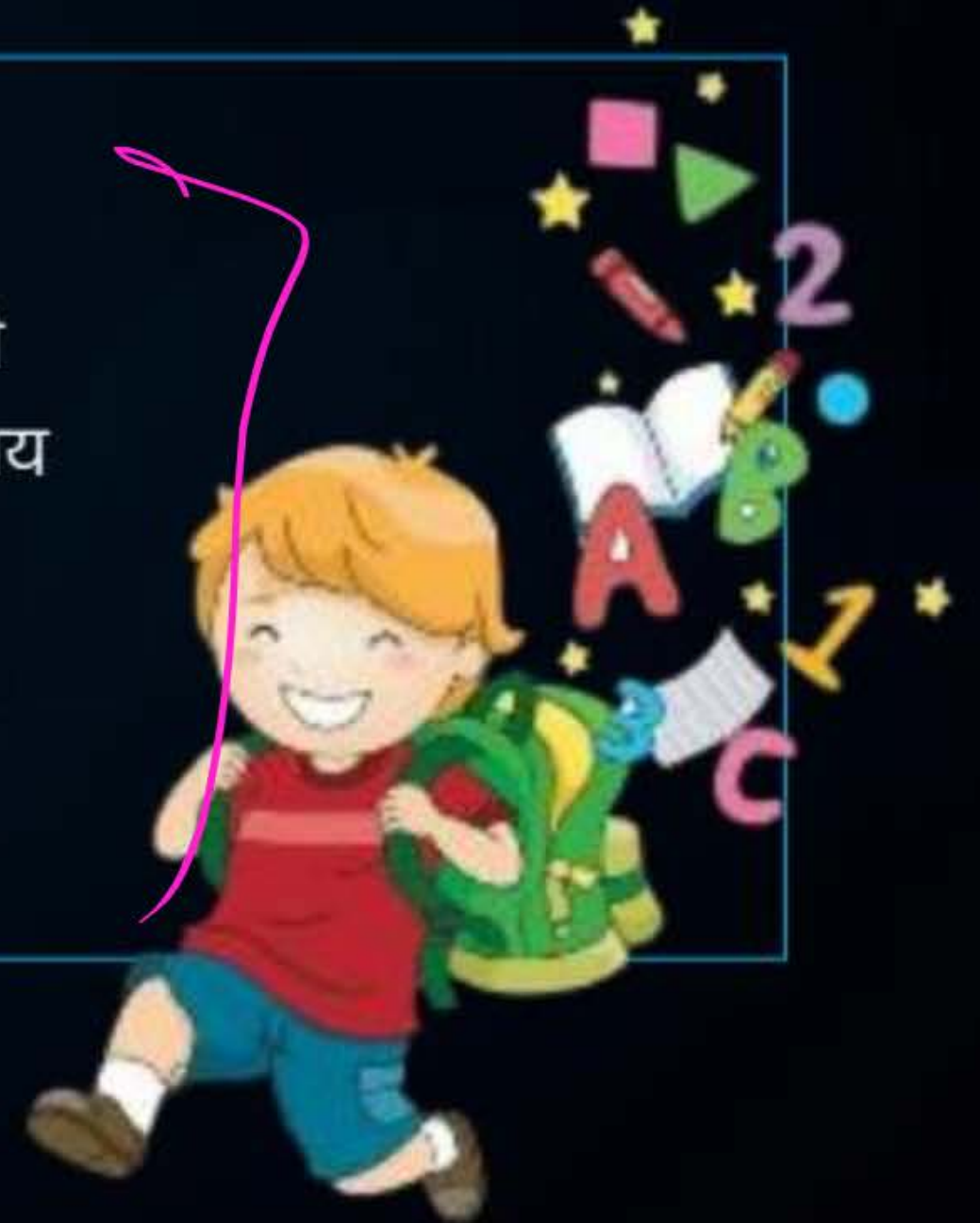
पर हित- दूसरों के कल्याण के लिए

डोलत धाए- घूमते-फिरते थे

फेर- फिर से

पाइहैं- पा लेंगी

अनीति- अन्याय



QUESTION



उद्धव किसकी संगति में रहकर भी प्रेम से अछूते रहे हैं?

A

कृष्ण की

B

गोपियों की

C

मित्र की

D

इनमें से कोई नहीं



A कृष्ण की

गोपियाँ किसके प्रेम में आसक्त हो गई हैं?

- A उद्धव-प्रेम
- ☒ B कृष्ण-प्रेम
- C संगीत-प्रेम
- D इनमें से कोई नहीं



Answer



B कृष्ण-प्रेम

गोपियाँ कृष्ण के प्रति कैसी भावना रखती हैं?

- A द्वेष की
- B क्रोध की
- C प्रेम की
- D घृणा की



C प्रेम की

QUESTION



गोपियाँ स्वयं को क्या समझती हैं?

- A डरपोक
- B निर्बल
- C अबला
- D साहसी



Answer



C

અબલા

QUESTION



कृष्ण के आने की प्रतीक्षा किसे है?

A भक्तों को

B उद्धव को

C गोपियों को

D यशोदा को



C गोपियों को

गोपियों को कृष्ण का व्यवहार कैसा प्रतीत होता है?

- A उदार
- B छलपूर्ण
- C निष्ठुर
- D इनमें से कोई नहीं



Answer



B છલપૂર્ણ

कवि के अनुसार गोपियों का स्वभाव कैसा है?

↓
युगः—

- A चतुर
- B निर्दयी
- C घमंडी
- D भोला



Answer



D મોલા

QUESTION



गोपियों को अकेला छोड़कर कृष्ण कहाँ चले गए थे?

A

ब्रज

B

द्वारका

C

मथुरा

D

वृन्दावन

युग/काल
भक्तिकाल
माया-ब्रज भाषा
देह-पद



Answer



C मथुरा

कृष्ण का योग-संदेश लेकर कौन आए थे?

- A** उद्धव
- B** बलराम
- C** सेवक
- D** इनमें से कोई नहीं



Answer



A

उद्धव

1. गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है?

उत्तर-गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में यह व्यंग्य निहित है कि उद्धव वास्तव में भाग्यवान न होकर अति भाग्यहीन हैं। वे कृष्ण के अद्वितीय सौंदर्य और प्रेम-रस के सागर के सान्निध्य में रहते हुए भी उस असीम आनंद में बंचित हैं।

2. उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है?

उत्तर: उद्धव के व्यवहार की तुलना दो तरह की वस्तुओं से की गई है :

(क) कमल के पत्ते से जो पानी में रहकर भी गीला नहीं होता है छीटें तक अपने पर नहीं पड़ने देता।

(ख) तेल में डूबी गागर से जो तेल के कारण पानी से गीली नहीं होती है अथवा उस पर पानी की एक बूंद भी नहीं टिकती।

चयन/दिना

3. गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं?

उत्तर- गोपियों ने कमल के पत्ते, तेल की मटकी और प्रेम की नदी के उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं। उनका कहना है कि उद्धव कृष्ण के साथ रहते हुए भी प्रेमरूपी नदी में उतरे ही नहीं, अर्थात् साक्षात् प्रेमस्वरूप श्रीकृष्ण के पास रहकर भी वे उनके प्रेम से वंचित हैं, यह उनका दुर्भाग्य ही है।

दुःख की अग्नि

4. उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम कैसे किया?

उत्तर: श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोपियाँ पहले से विरहाग्नि में जल रही थीं। वे तत्पर श्रीकृष्ण के दर्शन का इंतज़ार कर रही थी। वे उन्हें अपने मन की प्रीत से रुबरु कराना चाहती थी परन्तु ऐसे में जब श्रीकृष्ण ने उद्धव से योग साधना का संदेश भिजवा दिया तथा उनको भूल जाने की बात कही तब गोपियों का हृदय कांच के समान चूर-चूर हो गया। जिससे उनकी व्यथा कम होने के बजाय और भी बढ़ गई। इस तरह उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेशों ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम किया।

5. 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है?

उत्तर: 'मरजादा न लही' के माध्यम से प्रेम की मर्यादा न रहते की बात कही जा रही है। गोपियाँ कृष्ण के वियोग में जल रही थीं, परंतु कृष्ण ने स्वयं न आकर उद्धव के द्वारा यह संदेश भेज दिया कि गोपियाँ कृष्ण का प्रेम भूलकर योग साधना में लग जाएँ। प्रेम के बदले प्रेम का प्रतिदान ही प्रेम की मर्यादा है। लेकिन कृष्ण ने गोपियों के प्रेम रस के उत्तर में योग की शुष्क धारा भेजकर प्रेम की मर्यादा नहीं रखी।

6. कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?

उत्तर: गोपियों ने कृष्ण के प्रति अपनी अनन्य भक्ति की अभिव्यक्ति निम्नलिखित रूपों में की है :

(क) वे अपनी स्थिति गुड़ से चिपटी चींटियों जैसी पाती हैं जो किसी भी दशा में कृष्ण प्रेम से दूर नहीं रह सकती हैं।

(ख) वे श्रीकृष्ण और अपने प्रेम को हारिल की लकड़ी के समान मानती हैं।

(ग) वे श्रीकृष्ण के प्रति मन-कर्म और वचन से समर्पित हैं।

(घ) उन्हें कृष्ण प्रेम के आगे योग संदेश कड़वी ककड़ी जैसा लगता है।

(ङ) वे सोते-जागते, दिन-रात कृष्ण का जाप करती हैं।

7. गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है?

उत्तर: गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा ऐसे लोगों को देने की बात कही है जिनका मन चंचल है और इधर उधर भटकता रहता है। गोपियों का मन तो कृष्ण के अनन्य प्रेम में पहले से ही एकाग्र है, इसलिए योग साधना का उपदेश उनके लिए निरर्थक है।

8. प्रस्तुत पदों के आधार पर गोपियों का योग साधना के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट करें।

उत्तर: गोपियाँ योग साधना को निरर्थक एवं अनुपयोगी मानती हैं। उनके अनुसार योग-साधक प्रेम रूपी परम आनंद से वंचित रह जाता है। योग साधना तो मानसिक व्याधि के समान है। यह ऐसी कड़वी ककड़ी की तरह है, जिसे निगला नहीं जा सकता। जिन लोगों का मन चंचल रहता है, उन्हीं के लिए योग साधना की उपयोगिता है।

9. गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए?

उत्तर: गोपियों के अनुसार राजा का धर्म यह होना चाहिए कि वह प्रजा को कभी भी न सताए और निरंतर उनकी भलाई में लगा रहे। साथ ही वह अपनी प्रजा को अन्याय से छुटकारा दिलाए।

10. गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन-से परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं?

उत्तर: गोपियों को लगता है कि कृष्ण ने अब चतुराई और छल-कपट भरी राजनीति सीख ली है। अब वे प्रेम की मर्यादा भूलकर योग का संदेश देने लगे हैं। लोगों को दूसरों के अन्याय से मुक्ति दिलाने वाले अब स्वयं अन्याय करने लगे हैं। वे राजधर्म भूलकर गोपियों को सताने लगे हैं। कृष्ण में आए इन्हीं परिवर्तनों को देखकर गोपियाँ अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं।

1. बातों से

11. गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर जानी उद्धव को परास्त कर दिया, उनके वाक्चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- गोपियों के वाक्चातुर्य की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- (i) तार्किकता-उद्धव की तर्कपूर्ण बातों का उत्तर गोपियों ने तर्कपूर्ण ढंग से दिया।
- (ii) वचन-वक्रता-गोपियों ने उद्धव की बातों को वक्र वचन के द्वारा सरलतापूर्वक काट दिया।

लक्ष्यपूर्ण
स्वाभिकता।



Summary



पद → सूरदास

भाषा → ब्रज

रस → सुंगार (वियोग)

आलंकार → कृतुपास, उपमा

दृढ़ + पद उल्लेख



Homework



प्रश्न: गोपियों ने उद्धव के सामने तरह-तरह के तर्क दिए हैं, आप अपनी कल्पना से और तर्क दीजिए।

प्रश्न: उद्धव ज्ञानी थे, नीति की बातें जानते थे; गोपियों के पास ऐसी कौन-सी शक्ति थी जो उनके वाक्चातुर्य में मुखरित हो उठी?

बातों की चुनौती



THANK
YOU

